फुलवारी

कहानी

राजा की अजीब शर्त

बहुत समय पहले की बात है. राजा वीरेंद्र नाम का एक राजा था. वह अपने राज्य में बहुत प्रसिद्ध था. उसका राज्य हरा-भरा, सुंदर और खुशहाल था. लोग वहां खुशी से रहते थे. लेकिन राजा की एक आदत बहुत अजीब थी, वह हर बात को चुनौती और शर्त में बदल देता था. एक दिन राजा ने अपने दरबार में घोषणा की, जो भी मेरी अजीब शर्त पूरी करेगा, उसे मैं सोने से भरा एक बड़ा संदूक दूंगा. यह सुनते ही पूरे राज्य में हलचल मच गई. लोग सोचने लगे कि आखिर शर्त क्या होगी.

अगले दिन राजमहल के बड़े मैदान में सभी लोग इकट्ठा हुए. राजा अपने सिंहासन पर बैठा और बोला, 'मेरी शर्त बहुत आसान है. जो व्यक्ति बिना गुस्सा किए पूरे दिन मेरे साथ रहेगा, वही विजेता होगा. लोग हंसने लगे. उन्हें लगा कि यह तो बहुत आसान काम है. सबसे पहले एक अमीर व्यापारी आगे आया.

राजा ने उसे अपने साथ रखा. सुबह होते ही राजा ने व्यापारी से कहा, तुम बहुत धीरे चलते हो, थोड़ी देर बाद बोला, तुम्हारे कपड़े भी अच्छे नहीं हैं. फिर उसने जानबूझकर व्यापारी का खाना गिरा दिया. व्यापारी पहले तो चुप रहा, लेकिन दोपहर तक उसका चेहरा लाल हो गया. आखिरकार वह चिल्ला पड़ा, महाराज आप जानबूझकर मुझे परेशान कर रहे हैं.

राजा मुस्कुराया और बोला, तुम हार गए. इसके बाद कई लोग आए. कोई सैनिक, कोई मंत्री और कोई शिक्षक. लेकिन राजा सबको किसी न किसी बात पर गुस्सा दिला देता. कोई भी शाम तक शांत नहीं रह पाया. उसी राज्य के एक छोटे से गांव में गोपाल नाम का एक गरीब लेकिन समझदार लड़का रहता था. उसने भी यह शर्त सुनी. गांव वालों ने हंसकर कहा, अरे गोपाल बड़े-बड़े लोग हार गए, तुम क्या करोगे.

गोपाल मुस्कुराया और बोला, मैं कोशिश तो कर सकता हूं. अगली सुबह गोपाल महल पहुंच गया. राजा ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और बोला, तुम तो बहुत छोटे हो. गोपाल ने हाथ जोड़कर कहा, कोई बात नहीं महाराज. राजा ने उसे महल के बगीचे में ले जाकर खूब काम करवाया. कभी पानी भरवाया, कभी भारी लकड़ियां उठवाईं. फिर भी गोपाल शांत रहा. दोपहर के समय राजा ने जानबूझकर गोपाल की थाली नीचे गिरा दी. खाना मिट्टी में फैल गया. राजा बोला, अब क्या करोगे. गोपाल मुस्कुराया और बोला, महाराज, मिट्टी में गिरे खाने से धरती मां का पेट भर जाएगा. राजा थोड़ा हैरान हुआ. कुछ देर बाद राजा ने गोपाल के कपड़ों पर पानी फेंक दिया. दरबारियों को लगा कि अब तो गोपाल जरूर गुस्सा करेगा। लेकिन गोपाल हंसते हुए बोला, अच्छा हुआ महाराज, गर्मी बहुत थी.

राजा अब सोच में पड़ गया. उसने आखिरी कोशिश की. शाम होने से पहले राजा जोर से बोला, तुम बहुत मूर्ख लड़के हो. गोपाल शांत स्वर में बोला, अगर मैं सच में मूर्ख हूं, तो मुझे सीखना चाहिए. और अगर मैं मूर्ख नहीं हूं, तो गुस्सा करने की जरूरत नहीं. यह सुनकर पूरा दरबार शांत हो गया.

राजा कुछ पल तक गोपाल को देखता रहा. फिर अचानक उठकर बोला, आज तक कोई मेरी शर्त पूरी नहीं कर पाया. लेकिन तुम जीत गए. राजा ने गोपाल को सोने का संदूक दिया. साथ ही उसे राजमहल में बच्चों का सलाहकार भी बना दिया. राजा ने सभी लोगों से कहा, 'सच्ची ताकत तलवार या धन में नहीं, बल्कि धैर्य और शांत स्वभाव में होती है. उस दिन के बाद राजा ने भी अपनी आदत बदल दी. वह लोगों को परेशान करने के बजाय उनकी मदद करने लगा. राज्य के लोग और भी खुश रहने लगे. गोपाल ने अपने गांव जाकर गरीब बच्चों की पढ़ाई में मदद की. धीरे-धीरे वह पूरे राज्य का सबसे प्रिय बालक बन गया.

सीख

इस कहानी से हमे यहाँ सीख मिलती है की गुस्से पर नियंत्रण रखने वाला व्यक्ति ही सबसे मजबूत होता है. धैर्य और शांत स्वभाव से बड़ी से बड़ी मुश्किल जीती जा सकती है.

बिंदु मिलाओ

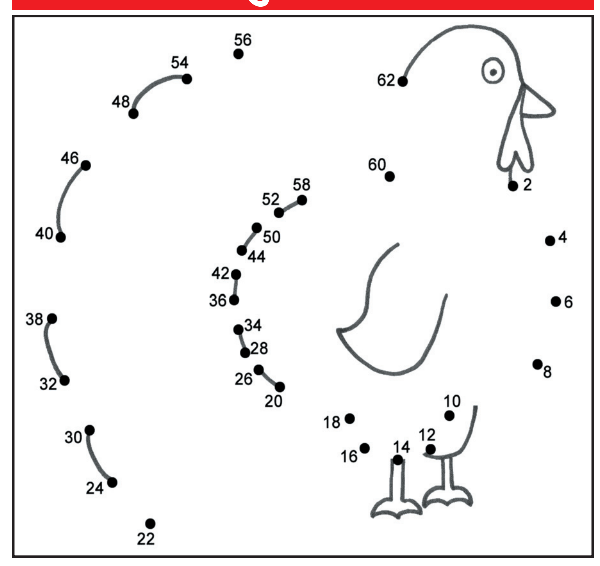

रंग भरो

प्रेरक प्रसंग

आधुनिक भारत के प्रथम जागरण पुरुष हैं राजा राममोहन

बहुत समय पहले बंगाल के एक छोटे से गांव में एक बालक रहता था, जिसका नाम था राममोहन. वह बचपन से ही बहुत जिज्ञासु और दयालु था. गांव के लोग उसे प्यार से 'मोहन' कहकर बुलाते थे. मोहन जब भी गांव में किसी के साथ अन्याय होते देखता, उसका मन दुखी हो जाता. एक दिन उसने देखा कि गांव की कुछ लड़कियों को पढ़ने नहीं दिया जा रहा था. उनसे कहा जाता था कि 'पढ़ाई केवल लड़कों के लिए होती है. यह सुनकर मोहन को बहुत बुरा लगा. उसने अपनी मां से पूछा, क्या लड़कियां बुद्धिमान नहीं होतीं.

मां ने मुस्कुराकर कहा, बेटा, हर इंसान को सीखने और आगे बढ़ने का अधिकार है. यही बात मोहन के मन में हमेशा के लिए बस गई. धीरे-धीरे मोहन बड़ा हुआ. उसने संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी जैसी कई भाषाएं सीखीं. किताबें पढ़ते-पढ़ते उसे समझ आया कि समाज में कई ऐसी बातें हैं जो लोगों को कमजोर बनाती हैं. अंधविश्वास, भेदभाव और पुरानी कुरीतियां लोगों की खुशियां छीन रही थीं.

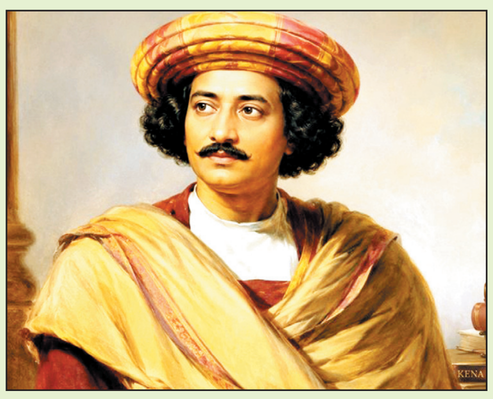

एक दिन गांव में एक दुखद घटना हुई. एक महिला के पति की मृत्यु हो गई। गांव के कुछ लोग उसे जबरदस्ती सती प्रथा के नाम पर आग में भेजना चाहते थे. यह देखकर राममोहन का हृदय कांप उठा. उन्होंने साहस के साथ लोगों को रोका और कहा, किसी की जान लेना धर्म नहीं हो सकता. धर्म वही है जिसमें दया और मानवता हो. लोग उनकी बात सुनकर चुप हो गए. उस दिन से राममोहन ने निश्चय कर लिया कि वे समाज से बुराइयों को मिटाकर रहेंगे. उन्होंने लोगों को समझाना शुरू किया कि सभी मनुष्य बराबर हैं. उन्होंने कहा कि लड़कियों को भी शिक्षा मिलनी चाहिए. वे गांव-गांव जाकर बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करते.एक बार कुछ बच्चों ने उनसे पूछा, 'गुरुजी, पढ़ाई इतनी जरूरी क्यों है.

राममोहन राय ने मुस्कुराते हुए कहा, 'ज्ञान एक दीपक की तरह है. जहां ज्ञान का प्रकाश होता है, वहां अंधेरा अपने आप दूर हो जाता है. उनकी बातें बच्चों और बड़ों दोनों के दिल को छू जाती थीं. धीरे-धीरे लोग अपनी पुरानी सोच बदलने लगे. गांवों में स्कूल खुलने लगे. लड़कियां भी पढ़ाई करने लगीं. समाज में नई जागृति आने लगी. राममोहन राय ने केवल किताबों की बातें नहीं कीं, बल्कि अपने कर्मों से लोगों को सिखाया कि सच्चा इंसान वही है जो दूसरों के दुख को समझे और समाज को बेहतर बनाने के लिए आगे आए. समय बीतता गया और उनका नाम पूरे भारत में सम्मान के साथ लिया जाने लगा. लोग उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता कहने लगे, क्योंकि उन्होंने समाज में नई सोच और नई चेतना जगाई थी. आज भी जब हम शिक्षा, समानता और मानवता की बात करते हैं, तब हमें राजा राममोहन राय की याद आती है. उनका जीवन हमें सिखाता है कि एक व्यक्ति भी अपने साहस और अच्छे विचारों से पूरे समाज में बदलाव ला सकता है.

विज्ञान के रोचक तथ्य

- आसमान से गिरने वाली बिजली सूरज से 5 गुना ज्यादा गर्म होती है.
- हमारे शरीर में हर साल लगभग 98 प्रतिशत परमाणु बदल जाते हैं.
- गर्म पानी ठंडे पानी से भारी होता है.
- सौरमंडल के सभी ग्रह बृहस्पति में समा सकते हैं.
- हमें सोते समय गंध का पता नहीं चलता है.
- समुद्री घोड़ों में मादा नहीं, नर बच्चों को जन्म देता है.
- जब हम छींकते हैं तो उसकी स्पीड 100 मील प्रति घंटा होती है.
- प्लूटोनियम पहला मानव निर्मित तत्व है.
- ऑक्टोपस के तीन दिल होते हैं! अजीब है ना?
- क्या आपको पता है? झींगा मछली (लॉबस्टर) अपने चेहरे से मूत्र करता है.
- और कछुआ अपने कूल्हों से साँस ले सकता है.
- एक मध्यम आकार के बादल का वजन 80 हाथियों के बराबर होता है.
- पृथ्वी की आयु 4 से 5 बिलियन वर्ष है. सूर्य और चंद्रमा की भी लगभग इतनी ही है.
- जब हाइड्रोजन हवा में जलती है, तो इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप पानी बनता है.
- प्रकाश को आकाशगंगा के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने में 100,000 वर्ष लगते हैं.

भूल भुलैया

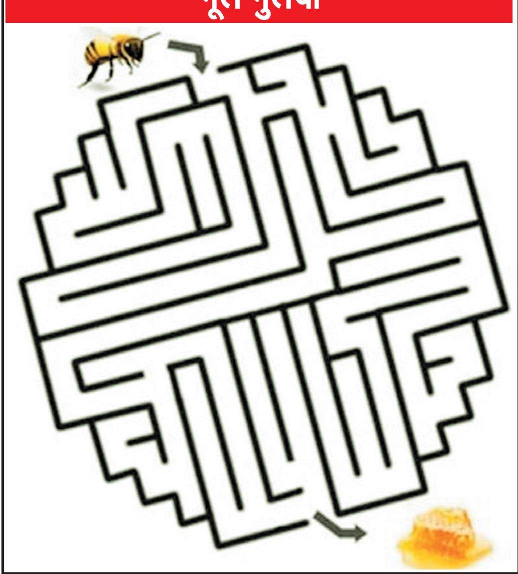

जानकारी

हमिंगबर्ड : छोटे आकार वाला साहसी पक्षी

प्रकृति ने इस धरती पर अनेक रंग-बिरंगे और अनोखे पक्षी बनाए हैं, लेकिन हमिंगबर्ड उन सभी में सबसे खास माना जाता है. यह दुनिया का सबसे छोटा पक्षी है, जो अपनी अद्भुत उड़ान और तेज गति के कारण लोगों को हैरान कर देता है. इसका आकार इतना छोटा होता है कि कुछ हमिंगबर्ड केवल 5 सेंटीमीटर लंबे होते हैं और उनका वजन एक छोटे सिक्के से भी कम होता है.

हमिंगबर्ड की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह हवा में एक ही जगह स्थिर रहकर उड़ सकता है. इतना ही नहीं, यह आगे, पीछे और यहां तक कि उल्टा भी उड़ने की क्षमता रखता है. इसके पंख एक सेकंड में लगभग 50 से 80 बार फड़फड़ाते हैं, जिससे हम्म् हम्म जैसी आवाज आती है. इसी कारण इसका नाम हमिंगबर्ड पड़ा.

यह पक्षी मुख्य रूप से फूलों का रस पीता है. जब यह फूलों से रस लेता है, तब अनजाने में परागकण एक फूल से दूसरे फूल तक पहुंच जाते हैं, जिससे पौधों का परागण होता है. इस तरह हमिंगबर्ड प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. हमिंगबर्ड की याददाश्त भी बहुत तेज होती है. यह आसानी से पहचान लेता है कि किस फूल में रस है और किसमें नही. इसका दिल एक मिनट में लगभग 1200 बार धड़क सकता है, जो किसी भी पक्षी के लिए बेहद तेज माना जाता है. इतना छोटा होने के बावजूद यह पक्षी बहुत साहसी होता है.

कई बार यह अपने से बड़े पक्षियों को भी अपने क्षेत्र से भगा देता है. इसकी चमकदार रंगीन पंख धूप में इंद्रधनुष की तरह चमकते हैं, जो इसे और भी आकर्षक बनाते हैं. हमिंगबर्ड हमें यह सीख देता है कि आकार छोटा होने से कोई कमजोर नहीं हो जाता. आत्मविश्वास, मेहनत और साहस इंसान को सबसे अलग बनाते हैं.

कविता

हाथी राजा

बड़े मजा, बहुत बड़े,
पेड़ हिलाते कहाँ चले
पेड़ गिराते कहाँ चले
गन्ना खाते कहाँ चले

मेरे घर आ जाओ ना,
हलवा पूरी खाओ ना,
आओ, बैठो कुर्सी पर,
कुर्सी बोले, चरर-चरर

बूझो तो जानें

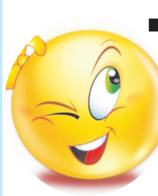

- मेरा नाम पाँच अक्षरों का है, मैं सुबह आती हूँ और रात में जाती हूँ. बताओ मैं कौन हूँ?
  उत्तर: सूरज
- सबको मैं देता हूँ खुशियाँ, मेरे बिना सब कुछ सूना है. बताओ मैं कौन हूँ?
  उत्तर: पानी
- मैं न जमीन हूँ, न आसमान, फिर भी ऊपर से नीचे उतरता हूँ बिना थकान.
  उत्तर: बारिश
- मैं सफेद हूँ, मीठा हूँ, सब बच्चे मुझे बहुत पसंद करते हैं.
  उत्तर: दूध
- मैं चलता हूँ बिना पैरों के, बोलता हूँ बिना मुँह के.
  उत्तर: घड़ी
- मेरा रंग हरा है, मैं खेतों में रहता हूँ, मुझे काटो तो स्वाद आता है.
  उत्तर: गेहूँ

हंसी-ठिठोली

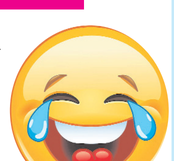

- पप्पू डॉक्टर के पास गया.
  डॉक्टर: 'क्यों आए हो?'
  पप्पू: 'डॉक्टर साहब, मैं भूलने लगा हूँ.'
  डॉक्टर: 'कब से?'
  पप्पू: 'कब से क्या?'
- टीचर: 'तुम्हारे घर में बिजली कैसे आती है?'
  बच्चा: 'सर, सॉकेट से.' टीचर: 'और?'
  बच्चा: 'बस यही और क्या?'
- मम्मी: 'अगर तुम अच्छे बच्चे बनोगे तो तुम्हें चॉकलेट दूँगी.'
  बच्चा: 'अगर मैं बुरा बच्चा बनूँ तो?'
  मम्मी: 'तो तुम्हें वही मिलेगा जो बुरे बच्चे को मिलता है... मार!'
- पप्पू: 'टीचर, मैं स्कूल क्यों आता हूँ?'
  टीचर: 'ताकि तुम पढ़ सको.'
  पप्पू: 'अगर मैं पढ़ना ही नहीं चाहता तो?'
  टीचर: 'तो घर बैठो, पर पढ़ाई होगी!'

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 1. कुत्ते का कान 2. लड़की के बालों पर लगा रिबन 3 बक्से में रखा बॉल 4 .थैली से निकलती चीज 5 . पेड़ पर बैठा बंदर 6 .लड़के के जूते 7 . लड़की की कलाई पर टैटू चिन्ह 8 . नदी के किनारे एक पत्थर गायब